(क्षमापन)

(दोहा)

बिन जाने वा जान के, रही टूट जो कोय;
तुम प्रसाद तैं परम गुरु, सो सब पूरन होय।
पूजन-विधि जानूं नहीं, नहिं जानूं आह्यन;
और विसर्जन हू नहीं, क्षमा करहु भगवान।
मंत्रहीन धनहीन हूं, क्रियाहीन जिनदेव
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरण की सेव।